

राजेश दुबेय
कल्पित
विजय कनोजिया
कृत
मेरे राम

कहानी की शुरुवात होती है सन २०१९ अक्टूबर का महिना गुलाबी मौसम बिहार के मधुबनी गोपाल गंज गाँव में रामलीला मेला की तैयारी हो रही है .. ठाकुर रामनाथ अपने पोते को गाँव का मेला घुमाने लाये है.. घूमते घूमते एक लाउड स्पीकर पर रामलीला के पहले दिन की शुरुवात होने की घोषणा हो रही है... पोते का ध्यान उस आवाज पे जाती है जो अपने दादा से उसके बारे में पूछे लगता है की ये क्या कह रहे है की आज राम लला का जन्म होने होने वाला है... ठाकुर रामनाथ कहते है की बेटा राम लला तो कई साल पहले जन्म ले चुके है ये जो कह रहे है वो सीताराम लीला के राम की कह रहे है... पोते के मन में उसे देखने की उत्सुकता बढ़ती है वो अपने दादा के साथ उस तरफ चल देते है जैसे जैसे वो उस तरफ बढ़ते है बड़े बड़े लाउड स्पीकर पर राम लीला में जन्मे राम के नाम का सोहर गातेहुए लोग एक स्टेज के किनारे से गा रहे है और स्टेज के एक किनारे पे राम लला को झूले में जानकी और दशरथ का रूप लिए कलाकार झूले को झुला रहे है... ठाकुर साहब को देखकर सब उन्हें जगह देते है वो अपने पोते को लेकर एक खटिया किनारे बैठ जाते है... शोर शराबे के बीच गाँव की राम लीला को देखता पोते के मन से voice आती है की ये मेरी आँखों देखि हुई सीता राम लीला थी ... जैसे जैसे लीला आगे बड़ रही थी राम बड़े हो रहे है दिन तीसरा जब राम जी को मेने पहली बार युवा अवस्था में स्टेज पे आते देखा उस कलाकार का रूप सुंदरता ने मुझे इस तरह आकर्षित हुआ मेने उन्हें आते देखकर प्रणाम किया और पुरे गाँव वाले नारे लगाये जा रहे थे उस समय उस पल मुझे लगा जैसे मेरे कदम अयोध्या नगरी में रामलला के महल में बैठे उनकी जय जयकार रहे हो ... कहानी आगे बढ़ती है घर पर पोते के मन में लीला को देखने का और बढ़ते जाता है आखरी दिन वो सबसे पहले पहोच जाता है जहा देखता है की स्टेज पर कोई नहीं वो स्टेज के पीछे की तरफ जाता है जहा देखता है कुछ लोग टंक में से कपडे निकल रहे है जिसे उसने अब तक सिर्फ स्टेज पे पहने हुए देखा था .. वो अन्दर की और जाता है जहा एक युवा लड़का अपने शरीर पर पावडर पोत और चेहरे पर लाली पावडर क्रीम लगा रहा है जिसे पोता बड़े ध्यान से देखता है फिर पीछे से एक आवाज आती है की कोसलपति जल्दी करो आज रावण वध है अपने चेहरे पर थोडा ज्यादा पाउडर लगा लेना श्री राम के चेहरे पे तेज लगे... पोता समझ नहीं पाता और बाहर आकार देखता है स्टेज के सामने एक बड़ा रावन का पुतला लगाया जा रहा है ... लीला की आखरी चरण की कहानी शुरू होती है पोता पूरी कहानी का लुप्त उठाता है रावण को जला कर सभी जय सीता राम के नारे लगते है और स्टेज पे खड़े सभी कलाकार को देखकर पोता हाथ जोड़ता है...

अगले दिन की सुबह गाँव के मैदान पे बच्चे cricket खेल रहे है एक जोर से मारी हुई गेंद दूर चली जाती है ठाकुर जी का पोता गेंद को लेने उस तरफ जाता है जैसे जैसे वो आगे बढ़ता है देखता है की कीचड़ से भरा हुआ रास्ता है कुछ सूअर वही लोट पटोट कर रहे है पोते को बड़ा घिन्न जैसा माहौल लगता है वो बिना गेंद लिए वापस लौटने के लिए मुड़ता है वैसे ही देखता है की दो तीन लड़के एक पेड़ के निचे किनारे के सहारे बैठकर गांजा फुक रहे है .. और उनमे एक लड़का दुसरे को कहता है की

अब क्या करेगा ये आखरी दम है कोसल और जो पैसे 10 दिन में कमाए थे वो भी खत्म हो गये हैं ... पोते के कदम वही रुक जाते हैं और वही खड़े होकर उससे कहता है की आप वही हैं जो इतने दिन तक राम बने लीला कर रहे थे .. कोसल उसे देखकर गांजा छुपाने लगता है और पास में पड़े गेंद को उसकी तरफ फेकता है .. बच्चे के मन में सवाल है पर उसका साथी आकर उसे वहां से चलने के लिए कहता है .. बच्चा कहता है इनसे बात नहीं करनी है तू क्यों गेंद लेने वहां चला गया फेक इस गेंद को नई ले लेंगे... कोसल और उसके दोस्त आगे की ओर बढ़ते हैं... कलुआ कोसल को कहता है चलो मेरे साथ सूरत वही की कुछ काम धाम ढूंढ लेना और रहने का तो चिंता मत कर मेरे साथ रहना .. कोसल घर पर ये बात अपनी माँ से बताता है माता पिता मान जाते हैं... खुशी खुशी दूसरे दिन कोसल और कल्लू दोनों अपना बैग उठाये वहां से चल देते हैं... कोसल अपने घर से छुटे आँगन से मधुबनी स्टेशन पहुंचने का सफ़र बड़ा बोझिल सा लगता है और कलुआ से कहता है की बड़ा अजीब लग रहा है जैसे सब कुछ पीछे छुट रहा हो जैसे राम अयोध्या छोड़ वनवास जा रहे हों.. कल्लू कहता है अब नौटंकी को भुल जा ये है असल जीवन यहाँ तेरी कलाकरी की कोई कीमत नहीं है ... और हां जब मेने पहली बार घर से जा रहा था तब मुझे भी ऐसा लगा था मैं तो अकेला था मुझे रोना आ गया था तेरे साथ तो मैं हूँ ... ट्रेन स्टेशन पे आकर रूकती है... जनरल डब्बे में एक किनारे कल्लू जगह बनाके कोसल को बैठने के लिए कहता .. स्टेशन से गाड़ी का छुटना कोसल के मन को डगमगाए जा रहा है नए शहर और अपने गाँव छोड़ने की खुशी और गम दोनों एहसास के बीच कोसल का सफ़र शुरू होता है... "जाते जाते रघुनंदन रोए, अयोध्या नगरी सब ही सोए"

सूरत भीड़ भाड़ वाले शहर में ट्रेन का रुकना कोसल के लिए एक अलग आनंद सा लगने लगा और कल्लू के झुग्गी तक पहुंचते पहुंचते वो कम होने लगते हैं ... कल्लू अपनी झुग्गी में पहले से रह रहे 5 लोगो से मिलाता है और कोसल को कहता है की वो अब 6 आदमी है जो वह रहेगा... कल्लू अगले दिन कोसल को लेकर घूमता फिरता काम की तलाश में अलग अलग जगह पहुंचता है... एक जगह उसे साड़ी की दुकान पे साड़ी बेचने की नौकरी मिल जाती है सेठ गुजराती होता है वो कोसल को कहता है सब काम करना पड़ेगा और 16 17 घंटे काम करने में आना कानी नहीं होनी चाहिए वैसे भी घर जाके तुम्हें सोने के अलावा क्या काम होगा .. कुछ दिन काम करने के बाद कोसल को ये एहसास हो जाता है बिहारी होना भी एक गाली है...

दिन आता है 09 नवम्बर २०१९ का सुबह से ही गली मोहल्ले में हलचल सी है कोसल कल्लू काम पे जाते हुए पूछता है की आज तो कोई त्यौहार नहीं है फिर भी हर जगह रौनक क्यों है... एक पोस्टर पे राम की बड़ी प्रतिमा के साथ लिखा था.. " कलयुग के राम का वनवास आज होगा खत्म मिलेगी उनकी अयोध्या नगरी जिनको हम कहते हैं जय श्री राम..." दुकान पहुंचते पहुंचते कोसल को समझ आ जाता है और सुप्रीम कोर्ट के द्वारा लिया गया निर्णय पुरे देश में आग की तरफ फैल जाता है शाम होते होते पुरे सूरत में जश्र का माहौल हो जाता है काम पर छुटकर लौटते हुए रास्ते जा रही झाकियों में शामिल होकर कोसल भी उन नारों में शामिल होकर चिल्लाने लगता है... जय श्री राम ... जय श्री राम .. उसी झाकियों में कोसल की नजर शालू से मिलती है वो भी जोर जोर से नारे लगा रही है... पहली नजर में कोसल को अपने जीवन साथी का एहसास होता है और वो उसे सीता के रूप में देखने लगता है.. पर भीड़ में वो दोनों एक दुसरे से अलग हो जाते हैं...

दिन गुजरते है कोसल को अपने जीवन में अकेलापन सा एहसास होता है उसे इस चीज का एहसास हो गया है की शहर में भले लोग जाती वाद ना करे पर परदेशी होने का एहसास लोगो के लहजे में झलकता है और उसी दिन उसकी दुकान पे शालू का आना होता है ... शालू को देखकर उसके मन में उथल पुथल शुरू हो जाती है... और ये सिलसिले की शुरुवात होती है .. और दोनों का मिलना जुलना शुरू होता है...

मुलाकातों का दौर अब गार्डन में वक्त बिताने तक पहुँचता है और दोनों एक दुसरे के लिए ट्रेन और पटरी जैसे हो जाते हैं .. शालू बताती है की वो अपनी माँ के साथ यहाँ आई थी और अब इसी शहर की होकर रह गई पिताजी लम्बे इलाज के बाद कुछ दिन पहले मर गए और ये शहर दे गए ... कोसल कहता है वो भी कमाने के लिए यहाँ आया है पर वो फिर लौट जायेगा क्योंकि उसे उसका गाँव और परिवार की याद आती है... उसे यहाँ अकेला सा लगता है... यहाँ लोग बटे हुए होकर भी एक साथ रहते हैं क्योंकि उन्हें एक दुसरे की जरूरत है... और गाँव में सब अपने लोगो के बीच में रहते हैं तो उन्हें दुसरो की जरूरत नहीं होती... कोसल कहता है की गाँव में हमें लोग मुसहर जाती का कहते पर यहाँ शहर में लोग कोसल कुमार से जानते हैं... एक साथ रहने वाले हम 5 लोग अलग जाती के हैं पर एक दुसरे के साथ रहते हैं... यही सोच कर अब गाँव जाने का मन नहीं करता ... शालू कहती है हा हम भी जब शुरुवात में आए तो हमें बड़ा अजीब सा लगा की इस झुग्गी में कैसे रहे गाव का घर भले छोटा था पर आँगन बड़ा था जहा चारपाई बिछा कर तारो को देखते हुए सोना अच्छा लगता था... पर जब यहाँ रहने लगे तो शहर में आजादी से रात हो या दिन घूमना और किसी का डर न होना नौकरी मिल जाना अपने काम से काम रखने वाली जिंदगी पसंद आने लगी.. दोनों की ये बातें दोनों को एक दुसरे को समझने के लिए काफी थी और दोनों ने शादी कर ली ... शादी के बाद कोसल और शालू अपने अपने काम पे जाते अलग से झुग्गी लेकर रहने लगे दिन बितते गए

दिन आता है 20 मार्च २०२० पूरी दुनिया में चर्चे होने लगते हैं की एक वायरस आया है जो पूरी दुनिया खत्म कर देगा इंसानियत का वजूद खत्म हो जायेगा.... रात 8 बजने का इन्तजार पूरे देश को था उस दिन प्रधान मंत्री बड़ा ऐलान करने वाले थे ... कोसल और शालू भी अपनी झुग्गी में टीवी के सामने बैठे थे जैसे ही प्रधान मंत्री lockdown की घोषणा करते हैं पूरे देश मौहल्ले में हड़कंप मच जाता है... शालू कोसल को कहती है अब क्या होगा अब कैसे गुजारा होगा कोसल कहता है पहले हम अभी की सोचते हैं बाद की बाद देखेंगे जैसे तैसे एक हफ्ता गुजरता है... फिर देश एक महीने के लिए लॉक डाउन में चला जाता है उस एक महीने में कोसल को लगता है की उस का परदेशी बने रहने का फैसला गलत होते जा रहा है... वो किसी भी तरह शालू को वापस अपने गाँव ले जाने की तैयारी करता है... स्टेशन पे लोगो को मार कर भगाया जा रहा था बस अड्डे पर बसों में लोग भरे हुए थे... कोसल कल्लू से मिलकर अपने गाँव जाने का जुगाड़ करता है वो तीनों एक बिहार जा रहे ट्रक में जाने का फैसला करते हैं .. पर जब ट्रक वाले के पास पहुँचते हैं तो पैसो की डिमांड सुनकर कोसल और शालू दंग रह जाते हैं कहते हैं की जो कमाई बची थी वो पूरी खत्म हो जाएगी कोसल शालू को समझता है की कैसे भी वो एक बार गाँव पहुँच जाये तो सब ठीक हो जायेगा ... यहाँ भूखे प्यासे मारने से भला हम अपने परिवार के साथ रहेंगे... जद्दोजहद के बाद किसी तरह एक हफ्ते बाद तीनों गाँव पहुँचते हैं...

खाली हाथ गाँव पहुँचने पर वहा का जीवन और कठिन हो जाता है... गाव में कुछ काम नहीं मिलता lockdown से उभरने के बाद दोनों ठाकुर रामनाथ के खेती में काम करने लगते और मिले हुए अनाज और पैसे से गुजरा करने लगते हैं.. कलुआ आता है और कहता ही राम लीला नजदीक आ रही है तो क्यों ना फिर लीला करे वैसे भी गाँव में इतने सालों से हमारी लीला देखन लोग आते हैं...शालू को इस बात का पता चलता है की नाटक मंडली किया करते थे इस साल की तैयारी भी जोर शोरे से शुरू की जाती है... lockdown के बाद ये पहला त्यौहार था जिसकी खुशी पूरे गाँव की थी... और साइकिल लेकर कल्लू और कोसल पूरे गाँव में announce करते हुए घूमते हैं... गाव के जयराम जो ठाकुर साहब का छोटा बेटा कुछ महीनो पहले ही शहर से लौटा है lockdown की वजह से जिसे कोसल का इस तरह पूरे गाव में घूमना पसंद नहीं आता है... और गाव के चौपाल पे बैठे दोस्तों के साथ कहता है इस बार इस चमार को राम नहीं बनने दूंगा इस बार मेरे राम अयोध्या आए हैं फिर उन्हें इन

जैसो कि वजह से वनवास में नहीं पहुचाना है ... जयराम अपने पिताजी से बात करता है की इस बार की राम लीला हम कराएँगे ... रामनाथ इसके खिलाफ होते है की हर साल से चल रही व्यवस्था को क्यों बिगाड़ना ... जयराम कहता है आने वाले चुनाव में हमें अब श्री राम ही जीता सकते है.. रामनाथ और जयराम में बहस होने पर ठाकुर रामनाथ भी अपने बेटे की मानकर पंचायत बिठाते है ... और उसमे इस बार के मेले में राम बनने के लिए अपने छोटे बेटे और उनके द्वारा बुलाई जाने वाली टोली को रामलीला के आयोजन करने की बात रखते है... इस बात पर कोसल कहता है ठाकुर साहब अब यही तो बचा है हमारे लिए जीवन व्यापन करने के लिए उसे भी आप हमसे छिन कैसे सकते है.. और आज तक की परम्परा रही है की हमारे यहाँ से ही सीताराम लीला होती आई है... जयराम खड़े होकर कहता है आज से सिर्फ राम लीला होगी आज तक मेरे राम अयोध्या में नहीं थे, बड़े सालो बाद उन्हें इन्साफ मिला है... और तुम जैसो की औकात ही क्या है जो तुम राम बनो मलीच कीचड़ में रहने वाले इसी बहस के बीच शालू कह पड़ती है कीचड़ में ही कमल खिला करते है कोसल उसे चुप करा कर निचे बैठा देता है.. ये बात रामनाथ को पसंद नहीं आती और पंचायत फरमान जाती कर देती ही की इस बार की रामलीला जयराम और शहर से आए उनके कलाकार करेंगे..

रात के समय कोसल और उसकी मंडली और आस पास के लोग बैठे हुए है... कल्लू कहता है अब क्या करे सोचा था सीताराम लीला से कुछ पैसे मिलेंगे तो थोड़े दिन और ठहर पाएंगे गाँव में फिर वही परदेश जाकर कमाना होगा ... शालू कहती है क्यों न हम यही काम ढूँढे शहर जाने की क्या जरूरत है... कोसल कहता है क्या करेंगे कौनसा काम करेंगे .. हम तो पढ़े लिखे भी नहीं की पटना जाकर कुछ कर सके खेती करने के लिए खेत नहीं है.. और ठाकुर साहब के यहाँ से जो भी मिलता है उससे तो पूरा साल नहीं निकल सकता न... कल्लू कहता है ईट पत्थर उठाने के भी इतने दूर जाना ही है तो परदेश क्यों नहीं...

वही दूसरी और रामनाथ जयराम कहता है अगर चुनाव में हमारे गाव में निचली जाती का कैंडिडेट को खड़ा करना पड़ेगा तो हम चुनाव हार जायेगे और इतने सालों से हम यहाँ के प्रधान रहे है ऐसा ना हो की इनके पीछे घूमना पड़ेगा वो हमसे नहीं हो पायेगा ... जयराम ऐसा नहीं होगा पिताजी प्रधानी के आगे का सोचिये यही सही समय है हमारे जाती का वोट बढ़ेगा और रही बात SC प्रधान को खड़ा कर देंगे उसमे भी हमारा फायदा है ऐसा चेहरा खड़ा करेंगे जिसका मुह काम और हाथ हमारे ही होंगे और आप लड़ेंगे विधायकी क्योंकि अब हमारे राम हमारे साथ है.. और यही समय है पैसा अपनी जाती के लिए खर्च करने का ...

शालू कहती है इसमें दुखी होने की बात नहीं है कोसल हम फिर सूरत चलेंगे और कमाएँगे.. कोसल कहता है कब तक ये पलायन चलेगे क्यों हम अपनी धरती अपने लोगो के पास रह सकते जैसे वहा काम है यहाँ क्यों नहीं ... शालू कुछ कह नहीं पाती सभी उदास है ...

गाँव के मेले का पहल दिन बहोत जोरो से DJ मेले में बज रहे है राम लीला का भव्य मंच सजा हुआ है सामने अतिथियों को बैठने की व्यवस्था की गई है... राम के रीमिक्स थीम पर DJ पर गाने बज रहे है...मंच पर रामनाथ सबका स्वागत करते है ... नए तरीके से रामलीला शुरू होती है ... DJ पर सोहर की जगह अब गाने बज रहे है इसी तरह तीसरा दिन आता है रामलीला का जहा अब राम युवा अवस्था में है राम की एंट्री स्टेज पे होती और कोई नहीं जयराम राम बनके आता है... सभी तालियों से स्वागत करते है ... रामनाथ के बगले में बैठा पोता दादाजी को कहता है ये नही है मेरे राम ... मेरे राम ऐसे नहीं है... ठाकुर रामनाथ पोते को कहता है की अब ये यही हमारे राम है... पोता नाराज बैठ जाता है... जैसे जैसे रामलीला आगे बढ़ती कुछ बूढ़े बुजुर्ग और गाँव वाले वहा से जाने लगते है और अब भजन मंडली की जगह DJ बजते ही कुछ युवा जमकर उसपर डांस करने लगते ही... रामनाथ का पोता अपने नौकर काका से वहा से चलने को कहते है... काका उसे बाइक पे बैठा कर खेतो की पगडंडियों से ले जा रहे होते है पोते के कानो में मंडली के ढोलक और गाने की आवाज जाती है जैसे की जानी पहचानी

हो... अँधेरे में जलते हुई टिमटिमाती लाइट्स खेतों के दूसरे किनारे दीखते हैं... पोता काका को उस तरफ चलने को कहता है... काका कहते हैं रात के समय हमें उन चमारों की बस्ती में क्या काम है... पोता कहता है चलो तो सही काका उसे वह ले जाते हैं ... जैसे जैसे वो उस तरफ बढ़ता है उसके कानों में मंडली के गानों की धुन बढ़ती जाती है... "मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी... सिया राम मय सब जग जानी, करहूँ प्रणाम जोरि जग पानी..." वहाँ जैसे ही पोता और काका बाइक पे पहुँचते हैं... देखता है चमारों की बस्ती में कोसल और उसके साथ संगत रामलीला का आयोजन किए हुए हैं और कोसल राम बने हुए हैं और शालू सीता मैया ये दृश्य देख पोता कहता है ये हैं मेरे राम जिनके आने से पशु पंछी इंसान ये ब्रह्माण्ड सब एक जगह जमा हो जाती है ये हैं मेरे राम की अयोध्या... पोता अब रोज चमारों की बस्ती में आकर राम लीला देखता और मेरे की लीला का उत्साह कम होने लगता है.. ये बात जब तक पता चलती है जयराम को वो रामलीला का आखरी दिन होता है... जयराम और उसे साथी ठान लेते हैं की अब उनको ये बताना ही होगा की राम किसके थे कोसलपति की लीला में रावण का वध होता है जैसे ही कोसल रावण पे बाण चलाता है रावण के जलते ही पीछे की बस्ती की झुगियों में आग लग जाती है... अफरा तफरी मच जाती है... एक बच्चे के चीखने की आवाज आती है ... कोसल उसे बचने के लिए बढ़ी सी कंबल लेके आग में कूद जाता है और उसमे से उसे बचा के अपने हाथों में उठाकर लाता है पीछे धनुष बाण लटका हुआ है ... सभी ये दृश्य देख अपने आप हाथों से नमन करने लगते हैं...

“रण में गरजे रघुनंदन, बिजली सी चमकी धार,
रावण तेरा अंत समीप है, सुन ले लंकेश्वर हंकार...
बाण चले प्रभू के हाथों से, जैसे अग्नि की धार,
धरती डोले, नभ गूंजे, हुआ प्रलय का शंखनाद..
रावण हँसा अभिमान भरा, मैं कौन हरा सकता,
प्रभु ने तान लिया धनुष अपार, बाण चला तो समय थम गया.. ”

इतने में कल्लू आकर कोसल को बताता है की ये सब जयराम और उसके दोस्तों ने किया है दोनों वह से गुस्से से निकलते हैं ये सब पोता देखता है जिसे कोसल ने आग से बचाया है...

मेले में कोसल और जयराम के लडकों में आपसी लड़ाई होती है जिससे पुरे गाँव वाले वहाँ जमा हो जाते हैं... ठाकुर रामनाथ इस लड़ाई को किसी तरह रुकाते हैं... कोसल कहता है बस यही तो एक चीज हमारी है वो है हमारी कला उसी में कोसल हूँ इसलिए मैं उस मँच का कोसलपति था उसे भी आप लोगो ने छिन लिया ... आज तक आप लोगो ने हमसे हर छिनी ही है... मेहनत हमें करे, कटाई हम करे, गन्दगी हम साफ़ करे, दुखों में हमें बुलाया जाता है., झूठन हमें खिलाया जाता है, इतने से भी मन ना भरे अपने गुस्से का शिकार बनाया हमें जाता है., हमारा पैदा होना भी एक श्राप है ...हमें तो बस एक कलाकार बनना था वो भी हम नहीं बन पाए हमें लगा राम मेरे भी है .. बताईये हमारी क्या गलती है... गाँव के बुजुर्गों में से एक बुजुर्ग आगे आता है और कोसल के पास बैठता है और कहता है इसमें गलती न मेरे राम की है ना तेरे ... राम हम सबके थे पर सबने अपने फायदे के लिए नए नए ढकोसले से नए राम का निर्माण कर दिया... राम वो है जिसमे अहंकार नहीं है, जो सत्य के साथ है, जो समाज में न्याय प्रिय है... जो अपने माता पिता का आदर करे, अपने लोगो को जोड़े लगे ... समाज कई साल से ऐसे ही बटते आया है कभी अपने फायदे के लिए तो कभी आने वाली पीढ़ी के फायदे के लिए... देश को आजाद हुए 75 साल हो गए मेरे सामने ये देश जवान हुआ है आजादी से पहले हमें जातियों में बाटा गया पर जब जरूरत पड़ी तो हम हिन्दुस्तानी बने और देश आजाद कराया पर आजादी के बाद आज

फिर हमें धर्म और जाती दोनों के नाम पे बाटा जा रहा है... कुछ बुरे लोगो से ये दुनिया नही चलती, दुनिया चलती है तो अच्छे लोगो से...

काका के साथ दौड़ते हुए पोता आता है और अपने चाचा जयराम को रावन हो तुम रावण तुमने ही उनकी बस्ती जलाई है मेने खुद देखा है.. जयराम अपने भतीजे को देखते ही रह जाता है.... ठाकुर रामनाथ ये सुनकर हदस जाता है और अपने बेटे को तमाचा मारता है और कोसल के पास आकर मँच की तरफ इशारा करते हुए कहता है की तुम ही इस मँच के कोसल और ये तुम्हारी अयोध्या है ... और राम ना तुम्हारे और ना मेरे और हमारे है और एक और रावण का वध करे ... मेले की रामलीला का समापन होता है

अगले दिन की सुबह एक नए प्रकाश की तरह होती है ... ग्राम पंचायत के स्कूल में शालू बच्चो के साथ बैठे पढ़ रही है... गाँव से गुजर के जाने वाले रास्ते के किनारे चाय की दुकान पर कोसल और कल्लू चाय बेच रहे है... चमारो की बस्ती को ठीक ठाक करते हुए जयराम और उसके दोस्त... रामनाथ और उनका पोता चलते हुए खेतो की तरफ जा रहे है..

रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीताराम..
सीता राम सीता राम,
भज प्यारे तू सीता राम....

जय श्री राम